Unit IIIrd का 6 Point (000000)

जीवन दक्षता तथा लैंगिकता
Life skills and Sexuality

शिक्षा ने मनुष्य को परिष्कृत करने का कार्य किया है। शिक्षित अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलतापूर्वक जीवन व्यतीत करता है चाहे वह आर्थिक हो, सामाजिक व्यावसायिक, धार्मिक सांस्कृतिक तथा राजनैतिक आदि ही क्यो न हो। जीवन की दक्षता तथा शिक्षा के मध्य अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। व्यक्ति के भीतर निहित सभी प्रकार की दक्षताओं और कुशलताओं को शिक्षा के द्वारा बाहर निकाला जाता है तथा अधिगम के अधिक से अधिक अवसरों की उपलब्धता अनुभवों की प्राप्ति, क्रिया के द्वारा सीखने के अवसरों द्वारा दक्षता में वृद्धि होती है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है और समाज में सफलतापूर्वक जीवन व्यतीत करने के लिए जीवन दक्षता (Life skill) का होना अत्यावश्यक है।

जीवन दक्षता से तात्पर्य
Meaning of life skills

जीवन दक्षता प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकताएं भोजन, वस्त्र, मकान, अर्थात (रोटी कपड़ा मकान) है जिनके बिना व्यक्ति जीवन व्यतीत नही कर सकता है। इन मूलभूत आवश्यकताओं के अतिरिक्त व्यक्ति के जीवन की कुछ भौतिक तथा आध्यात्मिक आवश्यकतायें है जो मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि तथा आत्मा को पोषित करती हैं। आदिकाल में मनुष्य के जीवन में दक्षता हेतु प्रशिक्षण का अभाव था जिसके कारण वह वृक्षों की छाल पहनता था, कन्दराओं में निवास करता था और वृक्षों की छाल तथा पत्तियो से अपना शरीर ढकता था। जीवन दक्षता से तात्पर्य ऐसी दक्षता है जिसके ~~अस्त्र~~ द्वारा व्यक्ति को जीवन व्यतीत करने हेतु दक्ष अर्थात कुशल बनाया जाता है। जीवन दक्षता द्वारा व्यक्ति को जीवन के विविध पक्षों को कुशलता से जीने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

जीवन दक्षता के विभिन्न पक्ष हैं जो इस प्रकार है _____

Agrawal

(1) सांवेगिक पक्ष में दक्षता:-

बालक तथा बालिकाओं की वृद्धि तथा विकासक्रम के कुछ असमानतायें उनके लिंग के कारण होती है। सांवेगिक रूप से बालिकायें और बालको को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। मनुष्य जानवरो से इसीलिए अलग और श्रेष्ठ माना जाता है कि वह बुद्धि के प्रयोग द्वारा अपने संवेगो को नियन्त्रित तथा मार्गान्तरीकृत करता है। सांवेगिक दक्षता में प्रशिक्षण की आवश्यकता वर्तमान में अत्याधिक है क्योंकि बालक तथा बालिकाओं को प्रारम्भ से ही उनके लिंग की विशेषताओं, आवश्यकताओं के अनुरूप सांवेगिक प्रशिक्षण प्रदान करना चाहिए जिससे वे जीवन में अच्छे मनुष्य बन सके, संवेगों के बहाव को नियन्त्रित कर सके, सांवेगिक आतुरता में गलत निर्णय लेने से बचें।

इस प्रकार लिंग की भूमिका सांवेगिक दक्षता विकास के लिए है।

(2) सामाजिक पक्ष में दक्षता:-

सामाजिक जीवन में दक्षता को लिंगीय आधार प्रभावित करते है क्योंकि स्त्री पुरुष दोनों के साहचर्य और संयोग द्वारा सामाजिक जीवन चलता है। अकेले पुरुष या स्त्री कोई भी दोनो मे से सामाजिक पक्षों का संचालन अकेले नही कर सकता है। इसी कारण से प्राचीन काल से ही स्त्री पुरुषों के कार्यो, अधिकारों और उत्तरदायित्वों का बंटवारा कर दिया गया था जो आज रूढ़ हो गयी है, लिंगानुसार सामाजिक जीवन में दक्षता आवश्यक है क्योंकि स्त्री-पुरुष दोनों की शारीरिक संरचना ही अलग नही है अपितु उनकी रूचिया, विचार तथा गुणों में भिन्नता है और ये दोनों मिलकर सामाजिक ढाँचे को सुचारू रूप से आगे बढाते है।

③ आर्थिक पक्ष में दक्षता:- मनुष्य अपने जीवन की मूलभूत और विलासपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति आर्थिक जीवन में दक्षता प्राप्त किये बिना नहीं कर सकता है। स्त्रियों को लिंग के आधार पर घरेलू कार्यों का दायित्वों को दिया गया और आर्थिक जीवन में उनकी भागीदारी न के बराबर रह गयी परन्तु वर्तमान में लिंगीय असमानता को समाप्त करने के लिए पुरुषों की भाँति स्त्रियों को भी आर्थिक दक्षता का प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। आर्थिक दक्षता पर लिंग का प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है।

④ धार्मिक पक्ष में दक्षता:- धर्म व्यक्ति को उसके कर्तव्यों, अच्छाई तथा बुराई से अवगत कराकर मानसिक शान्ति और आत्मिक उत्थान करने में सहायता प्रदान करती है, स्त्री तथा पुरुषों का लिंगीय आधार पर धार्मिक दक्षता हेतु प्रशिक्षित किया जाता है। धार्मिक परम्पराओं का पालन और उसके हस्तान्तरण का कार्य स्त्रियां करती है। अतः उनके प्रशिक्षण की आवश्यकता अत्याधिक है जिससे धर्म के संकुचित रूप नहीं व्यापक रूप का प्रशिक्षण प्रदान कर भावी पीढ़ियों से भी संकीर्णता को समाप्त किया जा सके। अच्छे जीवन के लिए धार्मिक दक्षता का महत्व अत्याधिक है क्योंकि धर्म ही व्यक्ति को शान्ति और आन्तरिक ऊर्जा प्रदान करती है।

⑤ व्यावसायिक पक्ष में दक्षता:- व्यावसायिक पक्ष में दक्षता के लिए बालिकाओं को उनकी रुचि तथा विशिष्ट आवश्यकता के अनुरूप व्यावसायिक विषयों के चयन की स्वतन्त्रता तथा उपलब्धता और व्यावसायिक निर्देशन तथा परामर्श की व्यवस्था प्रदान की जानी चाहिए। व्यावसायिक जीवन में दक्षता के कारण स्त्रियां स्वावलम्बी बनेंगी, देश तथा समाज में गतिशीलता आयेगी, जिससे लैंगिक भेदभावों में कमी आयेगी। व्यावसायिक पक्ष में स्त्रियों की दक्षता के परिणामस्वरूप जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि होती है।

(6) राजनैतिक पक्ष में दक्षता:- राजनीति में पुरुषों की प्रधानता और उनका वर्चस्व देखा जा सकता है परन्तु महिलायें अब राजनीति के उच्च पदों पर आसीन हो रही हैं, और राजनीति में उनकी प्रभावी भूमिका के लिए उनको राजनैतिक दक्षता के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए बिना किसी लैंगिक भेद-भाव के। अब यह भ्रम टूट रहा है कि स्त्रिया राजनीति के लिए अनुपयुक्त है। वर्तमान में लिंगीय भेदभावों से परे उठकर महिलाओं के जीवन स्तर (Quality of life) में वृद्धि के लिए उन्हे राजनीति में दक्ष बनाया जा रहा है।

(7) सांस्कृतिक पक्ष में दक्षता:- पुरुषों की अपेक्षा सांस्कृतिक विरासतों के संरक्षण और भावी पीढ़ी तक हस्तान्तरण का कार्य स्त्रियो द्वारा अधिक सफलतापूर्वक सम्पन्न किया जाता है, सांस्कृतिक तत्वों, उनकी उत्तरजीविता और उसमें स्त्रियों की भूमिका इत्यादि से स्त्रियों को अवगत कराकर स्वस्थ सांस्कृतिक परम्परा की नींव डाली जा सकती है। इस प्रकार संस्कृति में स्त्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका स्त्री पुरुष के मध्य सहयोग की अभिवृत्ति का विकास होने से लैंगिक भेदभावों में कमी आयेगी।

(8) राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पक्ष में दक्षता:- राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों में में भी स्त्रियों को बिना स्त्री-पुरुष के भेद-भाव के प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। स्त्रियों को करुणा, प्रेम, दया, त्याग और विश्वशान्ति का अग्रदूत माना जाता है। वर्तमान में वैश्वीकरण, उदारीकरण संचार और सूचना क्रान्ति के कारण कोई भी राष्ट्र अलग-थलग नही रह सकता। ऐसे मे स्त्रियो की अनदेखी नही की जा सकती है और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दो से उनको पृथक नही रखा जा सकता यदि देश की और विश्व मानवता की सच्ची सेवा और उन्नति करना है तो राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर स्त्रियों को प्रशिक्षित कर उनकी शक्तियों का भरपूर उपयोग कर जीवन में दक्षता में वृद्धि करनी चाहिए। इस प्रकार लिंगीय अभेदपूर्णता के कारण स्त्रियां पुरुषों के समान ही राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर जागरुक होकर जागरुकता प्रचार-प्रसार करेगी, जिससे जीवन की दक्षता तथा गुणवत्ता में वृद्धि का कार्य शीघ्रता से सम्पन्न होगा।

जीवन दक्षता: आवश्यकता तथा महत्व
Need and Importance of life skills

जीवन दक्षता की आवश्यकता स्त्रियों तथा पुरुषों दोनों के लिए समान रूप उपयोगी है। जीवन दक्षता की आवश्यकता तथा महत्व को स्पष्ट किया जा सकता है ——

⇒ भौतिक सुख-सुविधाओं तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु जीवन दक्षता की आवश्यकता होती है।

⇒ जीवन की गुणवत्ता हेतु जीवन दक्षता की आवश्यकता है।

⇒ जीवन दक्षता के द्वारा व्यक्ति अपनी सभी प्रकार की क्रियाओं का सम्पादन अविराम गति से करता है।

⇒ जीवन दक्षता व्यक्ति को उसके सर्वश्रेष्ठ को बाहर निकालने में सहायता करती है।

⇒ जीवन दक्षता के द्वारा अन्तर्निहित शक्तियों का सर्वोत्तम विकास होता है।

⇒ जीवन दक्षता पर्यावरण जनसंख्या इत्यादि मुद्दों पर जागरूकता लाने के लिए आवश्यक है।

⇒ जीवन दक्षता विश्व शान्ति और भातृत्व के लिए आवश्यक है।

⇒ जीवन दक्षता सभी प्रकार की योग्यताओं का विकास करती है।

⇒ जीवन दक्षता सन्तुलित व्यक्तित्व तथा सृजनात्मकता का विकास करती है।

⇒ जीवन दक्षता द्वारा देश-प्रेम और एकता की भावना का विकास होता है।

⇒ जीवन दक्षता व्यक्ति को कर्तव्यनिष्ठ बनाती है।

⇒ जीवन दक्षता वैज्ञानिक तथा तकनीकी आविष्कार के लिए आवश्यक है।

⇒ जीवन दक्षता स्त्रियों की समानता और स्वतन्त्रता के लिए महत्वपूर्ण है।

⇒ जीवन दक्षता के द्वारा लैंगिक मुद्दों के प्रति जागरूकता का विकास होता है।

⇒ आधुनिकीकरण की प्रक्रिया हेतु आवश्यक है।

⇒ स्त्रियों की समानता और स्वतन्त्रता के लिए महत्वपूर्ण है।

⇒ भौतिक सुख सुविधाओं तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु जीवन दक्षता की आवश्यकता होती है।

⇒ जीवन दक्षता साथ रहने, साथ-साथ सीखने, क्रिया करने और अस्तित्व का विकास करती है।

⇒

निष्कर्ष-(Conclusion):-

इस प्रकार हम निष्कर्ष रुप से कह सकते है कि जीवन दक्षता अत्यावश्यक है, जीवन दक्षता के द्वारा स्त्री-पुरुषों के जीवन में गुणवत्ता आती है और लिंगीय भेदभावों में कमी आती है। जीवन दक्षता के द्वारा ही स्त्रीं-पुरुषों के मध्य भेद-भावों में कमी आती है और स्त्रियों की प्रतिभा और अन्तर्निहित शक्तियों का विकास होता है, जिससे उन्हे समानता और स्वतन्त्रता प्राप्त होती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र घर गृहस्थी के चूल्हा-चौके से लेकर राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय विषयों हेतु अत्यावश्यक होता है। दक्षता के द्वारा प्रबन्धन कौशल का स्त्रियों में विकास होता है जिससे वे पारिवारिक तथा काम-काज के स्थलों पर भँली प्रकार से कार्य करती है और विकास के पथ पर अग्रसर होती है। लिंगीय मुद्दो में कमी का एक माध्यम है वंचितों तथा उपेक्षित लोगों को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दक्ष तथा कार्य-कुशल बना देना जिससे वे अपनें दीन-हीन स्थिति से ऊपर उठकर मुख्य धारा में आ सके।

Anushwaly